'असली दुख' या 'असली सुख'

प्यारे आत्म सम्बन्धी सुन्दरससाथ जी, परमधाम में जब, हमने अपने मेहबूब, प्राणप्रीतम धामधनी से तीसरी भोम में इश्क रबद किया (बेशक श्री जी की मर्जी से) और परिणाम स्वरूप हमें धामधनी तीसरी भोम से पहली भोम की पाँचवी गोल हवेली मूलमिलावा में ले आये। वास्तव में उसी समय से ही हमारे ऊपर दुख का पहाड़ टूट पड़ा था। परन्तु सच्चिदानन्द पारब्रह्म अक्षरातीत के धाम में दुख का क्या काम, अतएव ये भी हमें एक सुखद अनुभव हुआ। हम सब इतने प्रसन्न हो गये इतने आनन्दमयी हो गये कि जिस वस्तु का कभी हमने अनुभव नहीं किया, देखा नहीं और वो मिल जाये तो मन उसे पाकर इतना प्रसन्न होता है कि जिसका पारावार नहीं। ठीक हमारे साथ भी यही हुआ। अपने इस्क को बड़ा सिद्ध करने के भ्रम में, अपने को आशिक सिद्ध करने में ही अपनी बड़ाई जानी, और परिणाम का ज्ञान न होने के कारण प्रसन्नता से फूली न समाई।

बस यहीं से प्रारम्भ होती है हमारी रूहो की व्यथा! ये माया का दुख तो उस दुख के आगे नगण्य है। जिस प्रकार बड़ा कष्ट आने पर छोटा कष्ट स्वतः भूल जाता है ठीक उसी प्रकार हमें जिस समय ये अनुभव हो जायेगा (ज्ञात तो हमें बहुत पहले ही श्री जी स्वरूप सतगुरू ने करा दिया था) कि हमारा दुख क्या है। कभी भी हम उसके अतिरिक्त कुछ और सोच ही नहीं पायेंगे। प्रश्न ही नही होता कि उस को जानकर हमारा दिल न दहल जाये। और जब स्वयं पे ये घटित होता है अर्थात अपने अनुभव द्वारा प्रयोगात्मक रूप में पाते हैं तो हम बेहाल हुए बिना रह ही नहीं सकते। पिया, पिया, तू ही तू मेरे धामधनी प्राण प्रीतम इसके अतिरिक्त हमारे पास शब्द ही नहीं होगें।

आइये हम अपने ऊपर लगे इस गहरे आघात को देखें। इसका भी कारज कारण है। जब हमें कोई गहरा घाव लगा हो और पुनः उस घाव से उभर कर हम अच्छी स्थिति प्राप्त कर लेते हैं तब पुरानी बात याद आते ही दिल दहल जाता है एवं पूरे कष्ट का चक्र हमारे सामने एक तस्वीर के रूप में उभर आता है। ठीक इसी तरह धामधनी ने ये जो फरामोसी का दुख हमें दिया है केवल इसलिए कि खेल में आने के बाद कभी तो इन्हें अनुभव होगा कि हमें माया का दुख जो कि क्षणिक है उससे बड़ा दुख मिला है जो कि फरामोसी रहने तक अखण्ड रहेगा, इसकी याद आते ही रूहें निश्चित रूप से इस खेल को दुःस्वप्न जानकर मूल मिलावे में उठ बैठेगी। आज इसी दुख की चर्चा श्री राजजी महाराज के हुकम व मेहेर के सहारे आपके सन्मुख है।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, ये दुखः जो अन्ततः अखण्ड सुख में परिवर्तित होने वाला है इसका प्रारम्भ परमधाम में उस समय हुआ जब श्री जी के दिल में रहने वाली रूहें एवं सदा उनके इश्क के सागर में गोते लगाने वाली रूहो को श्री जी ने अपने दिल से निकाल कर अपने चरणों में बैठा दिया। सदा रंगमोहोल की मौज मस्तियों में डूबी, श्री जी के इश्क का स्वरूप, सदैव गंजानगंज इश्क

Nijanand App

के सागर में डूबी रहने वाली हौज कौसर की मछली से आज उसका इश्क ही छीन लिया गया, यूँ कहिये कि मछली को बिना जल के सांस लेने का हुकम दे दिया इससे बड़ा दुःख और क्या हो सकता है? और श्री जी ने फुरमाया कि चूँकि तुम्हें इस्क का ज्ञान नहीं अतएव मेरे चरण कमल पकड़ कर बैठ जाओं और अभी निर्णय हो जाता है।

ऐसी दई उलटाय के, बैठीं हो कदम के पास।
दरद न कहयो जाए दिल को, उमेद न रही न आस।।

खि. १/११

ये ही है हमारा असली दुखः अगर स्वयं धामधनी ने आकर हमें न बताया होता तो हमें इस दुख की भी खबर न लगती। परमधाम में तो हम फरामोसी में है व यहाँ श्री जी हमें फरामोसी देकर सुख पर सुख दिये जा रहे हैं एवं बीच-बीच में धीरे से कह देते हैं कि परमधाम के सुख तो सभी यहां लेने को तैयार बैठे हैं परन्तु जो दुख मैंने पुनः परमधाम की याद दिलाने के लिये दिया है जिसके अनुभव होने पर तुम सब परआत्म में उठ बैठोगी उस दुख को यहां कोई लेना तो दूर जानना ही नही चाहता।

'चाहने वाले दुख के, दुनियां में ढूंढ देख।
ब्रह्माण्ड यार है सुख का, दुख दोस्त हुआ कोई एक।'

कि० १६/३२

स्वयं थाम धनी फुरमा रहे है कि हे मेरी रूहों इस दुख का जिस दिन तुम्हे अनुभव हो जायेगा, तुम्हारा इस दुख के कारण ही पुनः प्राण प्रीतम से मिलन होगा, ये पाकर निश्चित रूप से तुम धामधनी के चरणों में उठ बैठोगी। क्योंकि जिस वस्तु के कारण तुम्हें यह दुख मिला है इसी मे वो इश्क आयेगा जो कि तुम्हे धामधनी के चरणों में उठायेगा।

'दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क।
इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिये हक।।'

कि० १६/१६

साथ ही में याद आ जाती है कि स्वयं धामधनी ने हमें यहां Practical दिखाया कि किस प्रकार हम मूल मिलावे में धामधनी के सामने बैठे हैं, रूबरू उनको देख रहे हैं पर हमें क्या हो गया कि हम धनी से बाते नहीं कर सकते अपने दिल की बात उन्हें नहीं कह सकते, उनके दिल की आवाज हम नहीं समझ सकते। इससे बड़ा दुख और क्या हो सकता है। हमारा मेहबूब हमारे सामने हो और हमें बात करने को मनाही हो। ऐसी स्थिति में कौन जीवित रहना पसन्द करेगा (फरामोसी)। ठीक यही स्थिति सरकार श्री ने हमें यहाँ दिखाई। अगर हमें याद हो तो सरकार श्री के तन की हालत काफी नाजुक हो गई थी, हम सब सुन्दरसाथ पूरी परिक्रमा में गोला बनाये खड़े थे, सभी के

Nijanand App

आँखों से आसुँओ की अविरल धारा बह रही थी, व सरकार श्री व्हील चेयर पर सभी सुन्दरसाथ को पूरी परिक्रमा में प्रणाम कर रहे थे। वास्तव में धामधनी स्वयं याद दिला रहे थे कि सुन्दरसाथ जी यही परमधाम का मूल दृश्य यहाँ पर तुम्हें याद दिलाने के लिये उतारा है। आमने सामने हैं, हम सब अर्धविक्षिप्त सी अवस्था में है, देख तो रहे है अपने प्राणनाथ को, बाते नहीं कर सकते। बेचैन हो जाते हैं दिल इतना द्रवित हो गया कि सभी सुन्दरसाथ पर फरामोशी सी छा गई। यही दुख हमें परमधाम में है।

इस दृश्य को देखकर भी हमें मूल दुख याद नहीं आया, तो धामधनी क्या करे। उन्होंने तो हमारे लिये साक्षात यहाँ परमधाम बना दिया। पर शायद श्री जी का हुकम ही ऐसा था।

अब हमें जब ये असली दुख (जोकि परमधाम के सुख यहाँ पर हम ले रहे हैं) उससे भी बड़े सुख की अनूभूति करा रहा है, एहसास करा रहा है तो निश्चित ही इस दुख में हमारा दिल डूब जायेगा। इस दुख का ही हमारे दिल पर राज होगा व हमें ऐहसास हो जायेगा कि हमने कितनी बड़ी भूलकर दी। जिसकी वजह से हम अपने महबूब के सामने होते हुए भी जुदा हैं। यही कष्ट असहनीय है और ऐसी स्थिति में हमें परमधाम के सुख भी अब नहीं भाएगे। भला अपने प्रीतम से दूर होकर उसके प्यार में खोना, उसके साथ बिताये गये क्षणों को याद करना, अपने घर की याद करना, ये सभी सुखदायी तो है परन्तु इसके साथ ही ये याद दिलाते है कि धामधनी हमारे साथ होते हुए भी दूर है, ये दुख सहन नहीं होता।

'सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख कैसी बात।'
एक वल पड़या आप बीच में, ताथे ए सुख रूहे न चाहत।।'

परि०

यही स्थिति रास में थी। सभी सुख थे, परन्तु पल भर के लिये धनी नजरों से ओझल हो गये, तो रूहों ने तुरन्त कह दिया कि हे मेरे धनी, सुख तो बहुत अच्छे थे, परन्तु आपके जुदा होते ही ये श्मशान सा प्रतीत होने लगा। अब हमें अपने घर ले चलो।

अब हमें न कहो हौज कौसर ताल की शोभा देखो, न कहो हमें मणिक पंहाड़ में जाने को, पुखराज भी नहीं भाता। बस अब तो यही इच्छा है तुम साथ रहो, तुम सामने रहो, तुमसे प्यार की बाते करें, तुम्हारी मीठी मीठी रसना से मेरे श्रवण भी आनन्दित हो उठे और तुम्हारे इस्क में सदा-सदा के लिये गर्क हो जाऊँ। बस हे मेरे धनी अब कुछ ऐसा उद्धम करो।

प्रणाम जी
सुनील निजानंदी
कानपुर

Nijanand App